



epaper.vaartha.com

5 लाख की गारंटी नए साल में 5 लाख बढ़ेंगे

88%
SOLD OUT

KEDIA
सेजस्थान

KOTHI & WALK-UP APARTMENT

— अजमेर रोड, जयपुर —

12%
UNITS LEFT

PROPOSED FIXED RATE & RENTAL

बड़ी-बड़ी कोठी बड़े-बड़े फ्लैट	आज की रेट ₹	जनवरी '24 की रेट ₹	पजेशन की रेट ₹	पजेशन के बाद रेंटल POSSESSION DEC. 2025
युनिट टाइप	साइज			
2 BHK (GF) अपार्टमेंट	1350 Sq Ft	54 LACS	56.25 LACS	67.50 LACS
3 BHK (SF) अपार्टमेंट	1900 Sq Ft	60 LACS	62.50 LACS	75 LACS
3 BHK (FF) अपार्टमेंट	1900 Sq Ft	66 LACS	68.75 LACS	82.50 LACS
3 BHK BIG कोठी	2000 Sq Ft	72 LACS	75 LACS	90 LACS
4 BHK BIGGER कोठी	2325 Sq Ft	84 LACS	87.50 LACS	105 LACS
4 BHK BIGGEST कोठी	3200 Sq Ft	120 LACS	125 LACS	150 LACS



1800-120-2323
78770-72737

info@kedia.com
www.kedia.com
www.rera.rajasthan.gov.in
RERA No. RAJ/P/2023/2387

SCAN QR FOR
• LOCATION
• ROUTE MAP
• SITE 360 TOUR
• E-BROCHURE
• WALKTHROUGH

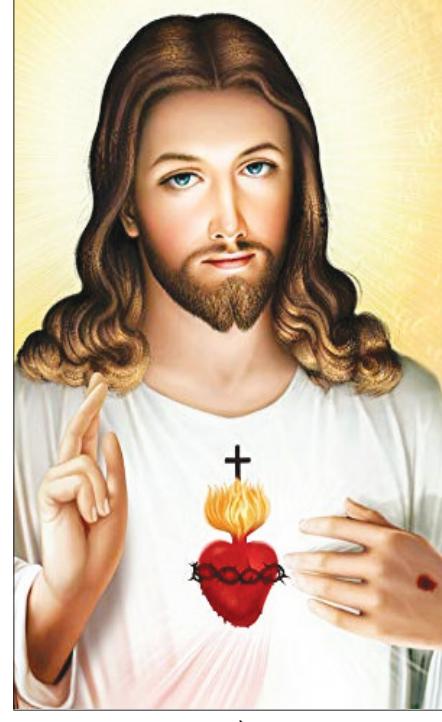


*T&C Apply



रविवार, 24 दिसंबर -2023, 8

यीशु के जन्म की कहानी



हजारों साल पहले की बात है। नजरेथ नामक शहर में
मरियम नाम की एक जवान महिला रहती थी। उन
दिनों मरियम का यूसुफ नाम के एक आदमी से प्रेम
था। एक रात जब मरियम सो रही थी, तो ईश्वर ने
उसके सपने में गेब्रियल नाम के एक स्वर्गदूत को भेजा।
उसने मरियम को बताया कि वह जल्द ही एक पवित्र
आत्मा वाले पुत्र को जन्म देगी, जिसका नाम उसे यीशु
रखना होगा। जब यह बात मरियम ने अपने साथी
यूसुफ को बताई, तो बदनामी के डर से इस खबर को
सुनत ही यूसुफ ने मरियम से अलग होने का फैसला
कर लिया। यह जानकर ईश्वर का वही स्वर्गदूत यूसुफ
को उसके सपनों में मिला और उसे बताया कि मरियम
एक पवित्र आत्मा को जन्म देगी। इसलिए, उसे मरियम
से शादी करनी चाहिए और उसके साथ रहना चाहिए।
उस स्वर्गदूत की बात सुनकर यूसुफ ने ऐसा ही किया।
उन दिनों नजरेथ शहर पर रोमन साम्राज्य का हिस्सा
हुआ करता था। जब मरियम गर्भवती हुई, तो उन्होंने
दिनों रोमन राज्य में जनगणना चल रही थी। राज्य के
नियमों के अनुसार यूसुफ और उसकी पत्नी मरियम भी
जनगणना में अपना नाम लिखवाने के लिए येरूशलम के
बैतलहम नगर चले गए। हालांकि, बैतलहम में उन्हें
रहने के लिए कोई स्थान नहीं मिला, जिस वजह से वे
दोनों एक गौशाले में रुक गए।

बैतलहम के उसी गौशाले में ही मरियम ने उस पवित्र
आत्मा वाले पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम योशु
रखा। जब उस गौशाले में अपने जानवरों की देखभाल
करने के लिए एक चरवाहा आया, तो इंश्वर के दूरों ने
उसे बताया कि उसका उद्धार करने वाला बैतलहम में
आज पैदा हुआ है। पहले तो उसने इस बात पर यकीन
नहीं किया, लेकिन जब उसने गौशाला में मरियम,

यूसुफ और याशु का दखा ता वह हरन रह गया।
वहीं, यीशु के जन्म के समय आसमान में एक तेज
चमकता हुआ सितारा भी दिखाई दिया था। उसे देखकर
एक टूर के शहर में रहने वाले तीन ज्योतिषी भी यीशु
के जन्म की खबर को समझ गए थे। वो तीनों उस
सितारे का पीछा करते हुए उस गौशाले तक आ गए थे।
वहां पहुंचकर उन्होंने प्रभु यीशु को प्रणाम किया।
उन्होंने यीशु के परिवार को उपहार दिया और यीशु की

A traditional painting depicting the Holy Family in a stable. The Virgin Mary, wearing a red and blue cloak, sits on a manger filled with straw, holding the Baby Jesus. She is looking down at Him. To her left stands Joseph, wearing a green cloak over a yellow and blue tunic, holding a wooden staff. In the background, a brown ox and a donkey are visible near a wooden fence under a thatched roof. A bright star is visible in the dark blue sky above.

पूजा भी की। उन तीनों ज्योतिषियों को यह पता था कि उस राज्य का राजा अच्छा नहीं है। उसे जब इसका पता चलेगा, तो वह यीशु को मार डालेगा। इसलिए, किसी ने भी राजा को यीशु के जन्म के बारे में नहीं बताया।

कुछ दिनों के बाद यूसुफ के सपने में एक परी आई, जिसने बताया की राजा हरोदेस यीशु को मारने की योजना बना रहे हैं। इसलिए, वह अपनी पत्नी मरियम व पत्र यीशु के साथ मिस्र चला गया।

वहीं, जब दुष्ट राजा हरोदेस को यीशु की कोई जानकारी नहीं मिली, तो उसने बैतलहम के सभी छोटे बच्चों को मारने का आदेश दे दिया। हालांकि, इस दौरान उस दुष्ट राजा की मृत्यु हो गई। इसके बाद यीशु ने अपने परिवार के साथ मिस्र को छोड़ दिया और तीनों ने इजराइल की यात्रा की। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन नजारेथ में गुजारा।

माना जाता है कि प्रभु यीशु का जन्म 4 से 6 ईसवी पूर्व फिलिस्तीन के शहर बेथलेहम में हुआ था। इनके माता और पिता नाज़ेरथ से आकर बेथलेहम में बस गए थे, और यहाँ पर प्रभु यीशु का जन्म हुआ था। इनकी माता का नाम मरियम और पिता का नाम युसूफ था। इनके पिता युसूफ पेशे से बढ़ाई थे। मान्यता के अनुसार परमेश्वर के संकेत से युसूफ ने मरियम से शादी की थी।

यीशु के जन्म के 2 वर्ष बाद ही उनके पिता की मृत्यु हो गई, और उनका लालन-पालन उनकी माता मरियम ने किया था। क्रित्यचयन धार्मिक ग्रंथों में प्रभु यीशु के 13 वर्ष से 30 वर्ष तक के जीवन के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसके बाद 30 साल की आयु में प्रभु यीशु ने यूहन्ना से शिक्षा हासिल की। इसके बाद धर्म की स्थापना में जुट गए।

प्रभु यीशु के लिए लोगों के मन में बढ़ते हुए प्रेम को देखकर अंधविश्वास फैलाने वाले धार्मिक वक्त अपनीहोंने उनका पारामो निपोध

धामक कट्टरपथया न उनका पुरजार वाराध किया। जिसके कारण यहूदी राजा पौंटियंस ने प्रभु यीशु को रोकने के लिए सभी तरह के जतन किए। लेकिन इससे वे जरा भी विचलित नहीं हुए और धर्म का प्रचार करते रहे। राजा पौंटियंस को डर था कि अगर वह प्रभु यीशु को नहीं रोकते हैं तो यहूदी क्रांति कर सकते हैं। इसके लिए प्रभु यीशु को मृत्युदंड की सजा दी गई।

सजा के तौर पर प्रभु यीशु को सूली पर चढ़ाया गया, उस दिन फ्राइडे था। जब उनकी मृत्यु हो गई तो उन्हें कब्र में दफना दिया गया। 3 दिनों के बाद प्रभु यीशु कब्र से पुनः जीवित हो उठे थे। उस दिन संडे था। जिसे ईस्टर संडे के नाम से भी जाना जाता है। बहुत से यहूदियों ने वह चमत्कार अपनी आंखों से देखा। इसके बाद प्रभु यीशु के स्थिष्ठों ने उनके उपदेश को जन-जन तक पहुंचाया। उस समय एक नवीन धर्म की स्थापना हुई, जिसे ईसाई धर्म कहा जाता है।

कहानी से सीख

इसी मसीह की कहानी हमें यह सीख देती है कि बुराई की कभी जीत नहीं होती है। बुरे लोगों का विनाश करने के लिए ईश्वर हमेशा किसी न किसी रूप में धरती पर आते हैं।

क्यों काशी में मृत्यु का होना मंगल माना जाता है?



महादेव की नगरी काशी विश्व की सबसे प्राचीन नगरियों और तीर्थधार्मों में से एक है। यह नगरी अद्भुत रहस्यों से भरी पड़ी है महादेव के कंठ में यदि राम नाम का जाप चलता है तो उनके हृदय में काशी वास करती है। सप्तपुरियों में काशी भी एक है और यहां मृत्यु को मंगल बताया गया है। काशी के बारे में ज्यादा जानना हो तो काशी खण्ड में कई सारी बातें इस शिव नगरी के बारे में बताई गई हैं। काशी नगरी मां गंगा के तट के समीप बसी हुई है और यहा लगभग 84 घाट बने हुए हैं। काशी का सबसे प्रसिद्ध और रहस्यों से भरा घाट मणिकर्णिका है। जिसे महाश्मशान कहा जाता है। अखिर काशी में मृत्यु को उत्सव के रूप में क्यों देखा जाता है

जो जीव काशी में प्राण त्यागता है फिर उसे जन्म-
मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।
काशी की महिमा और मणिकर्णिका घाट का महत्व

त्वर्तीरे मरणं तु मङ्गलकरं देवैरपि श्लाघ्य
शक्रस्तं मनुजं सहस्रनयनैर्द्रष्टुं सदा तत्परं
आयान्तं सविता सहस्रकरणैः
प्रत्यगदतोऽभृत्सदा

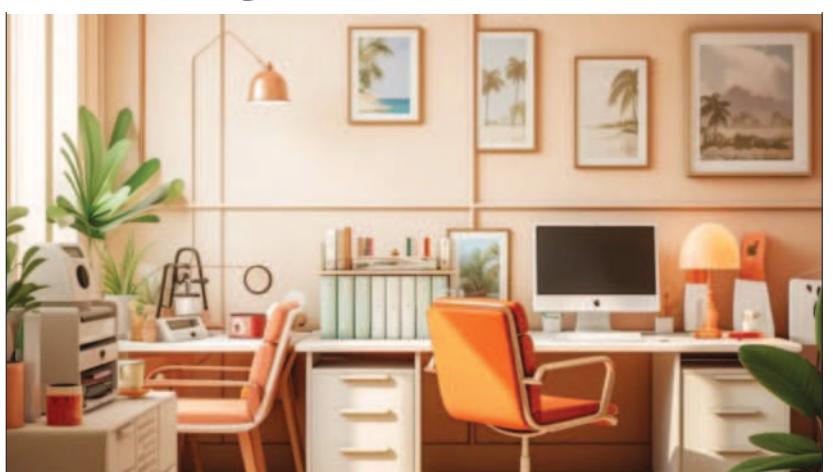
पुण्योऽसौ वृषगोदथवा गरुदगः किं
मन्दिरं यास्यति ॥

इस श्लोक में मर्णिकर्णिका घाट की प्रशंसा में
लिखा गया है कि इस घाट के टट पर मृत्यु
शुभ है और इसकी प्रशंसा स्वयं देवता करते
हैं। जिस व्यक्ति की मृत्यु काशी में होती है
उसे देवताओं के राजा इंद्र अपनी सहस्र नत्रों
से देखने के लिए व्याकुल रहते हैं। सूर्य देव
भी उस जीवात्मा को शरीर त्याग आता देख
अपनी हजार किरणों से उसका स्वागत करते
हैं। देवता उस जीवात्मा के परलोक गमन की
यात्रा के बारे में चर्चा करते हैं और मन ही
मन सोचत है कि पता नहीं यह जीव वृषभ
(शिव के वाहन का स्वरूप) पर सवार होकर
या फिर गरुड़ (भगवान विष्णु का वाहन) पर
सवार होकर बैकुंठ जाएगा या कैलाश। इसकी
परम गति तो हम भी जानने में असमर्थ हैं।

काशी में 24 घंटे जलती है चिता
 काशी के मणिकर्णिका घाट में 24 घंटे चिता
 जलती रहती है और यह कभी भुजती नहीं है
 इसलिए काशी के इस घाट को महाशमशान
 कहते हैं। यह घाट अनेक रहस्यों से भरा पड़ता
 है। काशी खंड के अनुसार जिसका भी यह
 अंतिम संस्कार होता है या मृत्यु होती है उसके
 स्वयं भगवान शिव तारक मंत्र कान में देका
 मोक्ष प्रदान करते हैं।

आखिर क्या तारक मंत्र देते हैं भगवान शिव
मान्यता है कि काशी में जो भी अपने प्राण
त्यागता है भगवान शिव स्वयं उसके कान में
तारक मंत्र बोलते हैं। जिसे जानकर जीवात्मक
सीधे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता
है। इसलिए काशी में मृत्यु को मंगल कह
जाता है। कितना भी दुर्चारी व्यक्ति या पाप-
प्राणी क्यों न हो उसकी मृत्यु यदि यहां होती
है तो उसकी मुक्ति सुनिश्चित है। पुराणों में
लिखा है काशी में मृत्यु को प्राप्त करना पूरा
जन्म के कर्म ही होते हैं। भगवान शिव जीवात्मक
के कान में आकर तीन बार राम राम राम बोलते
हैं। जिसे तारक मंत्र कहा जाता है क्योंकि राम
नाम में इतना सामर्थ है कि यह किसी को भी
भव सागर से पार कर सकता है।

सट्टी रुम से जुड़े इन वास्तु नियमों का रखें ध्यान



पक्षियों की तस्वीर लगानी चाहिए। वास्तु के मूत्राबिक, स्टडी रूम में किताबों की अलमारी और पढ़ाई करते वक्त बच्चे के बैठने की सही दिशा भी जरूरी है। किताबों की अलमारी को रखने के लिए स्टडी रूम में पश्चिम दिशा का चुनाव करना चाहिए। अगर पश्चिम दिशा में ज्यादा स्पेस न हो तो पश्चिम से दक्षिण की तरफ वाली दिवार के पास रख सकते हैं। इसके अलावा पढ़ाई करते समय बच्चे का मुँह पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए। अगर पूर्व दिशा में व्यवस्था न हो तो आप उत्तर-पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके भी पढ़ सकते हैं। इससे बच्चे को चीजें आसानी से समझ में आती हैं।

पूजा घर के लिए शुभ होते हैं ये दंग



मादर का निर्माण करवाएं। अगर आप उत्तर-पूर्व दिशा में लकड़ी के मंदिर का निर्माण करवा रहे हैं तो मंदिर के नीचे गोल पाए जरूर बनवाएं।

ज्ञाला माई को चढ़ाते हैं मन्नत का कबूतर

शिलांग, 23 दिसंबर (एकस्वलूसिव डेस्क)। लुम सोहपेटवर्गी उभियम्। यह मेघालय की राजधानी शिलांग से 25 किलोमीटर की दूरी पर एक ऊची पहाड़ी पर स्थित एक गांव है। गांव बहुत ही खूबसूरत है, ऊचाई से देखो तो ऐसा लगता है कि शायद जनन इनाहीं ही सुंदर होगा। यहां ज्ञाला माई के नाम का भी एक मंदिर है।

इस मंदिर के कर्ता धर्म हिंदू नेपाली समुदाय के लोग हैं। कई दशकों से इनके ही पूर्वज यहां पूजा करते आए हैं। यहां रहने वाले ईसाई समुदाय के लोग मंदिर की मान्यता पर विश्वास करते हैं। इस मंदिर में जाने के लिए शिलांग से एक टैक्सी ली। हो-भेरे पेड़ों से ढके आसमान और स्थानीय नदियों के किनारे से होते हुए टैक्सी एक बड़े से गेट पर पहुंचता है।

यहां से लगभग दस किलोमीटर की चढ़ाई पर है गांव लुम सोहपेटवर्गी उभियम्। ऊपर तक टैक्सी जाती है इसलिए मुझे चढ़ाई पर देखा कि इस खिचड़ी में आ जाएं। यहां पहुंचने ही मैं दूर से देखा कि एक महिला चूल्हे पर कुछ पका रही है। पंडितजी ने बताया कि जो महिला खाना बना रही है, वो उक्ती पत्नी है। इस मंदिर में खिचड़ी को प्रसाद बनाया चढ़ाई करता है। इस प्रसाद को मुख्य पुजारी के परिवार का सदस्य ही जानता है।



दूर धुमावादर संकरी सड़के हैं। मंदिर के पंडित यीकाराम पराजित से मुलाकात होती है। अपने आपने की सूचना उड़े पहले ही दे दी थी। मिलते ही उन्होंने कहा कि इस खिचड़ी में दाल कितनी डलती है। इसका भी एक पहले नीचे मरिंद्र प्रांगण में आ जाएं। वहां पहुंचने ही मैं दूर से देखा कि एक महिला चूल्हे पर कुछ पका रही है।

मन्नत के लिए चढ़ाया जाता है कबूतर का जोड़ा

गांव के नेपाली परिवारों की यहां इष्ट देवी हैं और गांव ही नहीं आसपास के जिलों से यहां तक कि गुवाहाटी तक से लोग यहां आये अपनी मन्नते लेकर आते हैं। मन्नत तो देश के हर मंदिर-मस्जिद में मार्गी जाती है। यहां इन्होंने कबूतर क्यों हैं? पंडित यीकाराम बताते हैं कि यहां की मुख्य मान्यता है कि यहां लोग मन्नत मांगते हैं। मन्नत मांगने के बाद उनका मुराद जब पूरी हो जाती है तो यहां लोग कबूतर का जोड़ा चढ़ाता है। अलग बात यह है कि उन चढ़ाएं गए कबूतरों के लिए भी एक मन्नत होती है।

हैं।

मंदिर में आई सीता विश्व बताती है कि यहां हर गांव से लोग आते हैं। खासकर यहां राम नवमी में पूजा होती है। मंगलवार और शनिवार को भारी भीड़ उमड़ती है। मन्नत वाले कबूतर बाती बात रह गई? पुजारी कहते हैं, 'हां इन कबूतरों के लिए, फिर से एक मन्नत इसलिए होती है कि व्यक्ति का मन्नत यहां भी है कि जिसके भी घर पर आकर कबूतर बैठते हैं, उस व्यक्ति के घर पैसे की कमी नहीं होती। वह धनवान ही जाता है इसलिए, हर किसी की चाचत होती है तो यहां लोग कबूतर उनके आपाने जाएं। यहां मंदिर के लिए भी पानी है। कोई नहीं जानता की पानी कहां से आया है। ये भी कहा जाता है कि उस पानी पर ही मंदिर बना है। वहां से एक नाली के जरिए पानी की निकासी की गई है। पूरा गांव निकासी किया गया पानी पीता है।

मन्नत वाले कबूतरों की पहचान अलग रखी जाती है। कुछ लोग उनके पास अलग किम्बे व्यक्ति का रुप होते हैं तो कुछ उनके पंखों को रंग देते हैं। पुजारी यीकाराम कहते हैं, 'दरअसल गांव का हर व्यक्ति चाहता है कि मन्नत वाले कबूतर उसकी ही घर पर आकर बैठे। गांव के लोग उसके पंखों को काट देते हैं, ताकि वो लंबी उड़ान न उड़ सके। ऐसे में कबूतर गांव के घरों में ही रहते करते हैं।

मन्नत के पंडितों को बरदान है

इस गांव के लोग अपने आपने

